इकाई 12 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

इकाई की रूपरेखा

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 लोकप्रिय संस्कृति क्या है?

12.3 नातेदारी की पुर्नकल्पना

1.3.1 परिवार

12.4 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

12.5 सारांश

12.6 संदर्भ

12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- संस्कृति तथा लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों को व्याख्यायित करना।
- नातेदारी में बदलाव का मूल्यांकन करना।
- एक संस्था के रूप में परिवार, इसके ऐतिहासिक परिपेक्ष्य तथा वर्तमान समय में परिवार की संकल्पना करना।
- लोकप्रिय संस्कृति में नातेदारी के स्वरूप में परिवर्तन की व्याख्या करना।

12.1 परिचय

19वीं शताब्दी के मध्य में लोकप्रिय संस्कृति सामाजिक विज्ञान में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला शब्द बन गया, क्योंकि यह अभिजात वर्ग या उच्च वर्ग की संस्कृति के विपरीत जनता की संस्कृति का उल्लेख करता है। मानव–शास्त्र में लोकप्रिय संस्कृति का अध्ययन कला, लोककथाओं, संगीत आदि से संबंधित था। परिवार तथा विवाह पर लोकप्रिय संस्कृति के प्रभाव के साथ ही नातेदारी के अध्ययन की सीमाओं को पुर्नपरिभाषित किया जाने लगा। इसने रिश्तेदारी को स्वाभाविक रूप में देखने के स्थान पर नये पारिवारिक रूपों की समझ तथा विकल्पों की संभावना को जन्म दिया है।

रि–कास्टिंग नातेदारी पर पिछली इकाई में, हमने उन क्रमिक परिवर्तनों पर चर्चा की है जिनसे नातेदारी गुजरी है। नातेदारी के समाजशास्त्र पर पाठ्यक्रम में, यह इकाई लोकप्रिय संस्कृति और नातेदारी की पुनर्कल्पना पर केंद्रित है। इस इकाई का उद्देश्य उन परिवर्तनों को समझना है जिनसे नातेदारी की संस्था का स्वरूप विकसित हुआ है, विशेष रूप से परिवार तथा रिश्तों की पुनर्परिभाषा साथ ही किस प्रकार से लोकप्रिय संस्कृति समाज में इन परिवर्तनों को दर्शाती रही है। आइए पहले देखें कि लोकप्रिय संस्कृति क्या है और इसने रिश्तेदारी की पुनः कल्पना को कैसे चित्रित किया है।

12.2 लोकप्रिय संस्कृति क्या है?

लोकप्रिय संस्कृति क्या है, इसे समझने के लिए संस्कृति के अर्थ को समझना जरूरी है। संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार तथा प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा तथा सीख सकते हैं। यह वैसा ही है जैसे व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सीखता है क्योंकि वह किसी विशेष समाज, उसकी भाषा, रीति–रिवाजों, रूढियों, प्रथाओं, विश्वास प्रणालियों में आकार लेता है। संस्कृति में कई उप–संस्कृतियां हो सकती हैं, उदाहरण के लिए, भारतीय संस्कृति एक व्यापक शब्द है, तथा इसमें कई जातीय रूप से विविध उपसंस्कृति, छोटे समूह या जातीयताएं हैं जिनकी अपनी स्थानीय भाषा, रीति–रिवाज, परंपराएं आदि हैं। जैसे तमिल संस्कृति, मणिपुरी, कश्मीरी, महाराष्ट्रीयन उप–संस्कृति, आदि।

लोकप्रिय संस्कृति को उन विश्वासों, प्रथाओं के समूह के रूप में देखा जा सकता है जिन्हें समूह या समुदाय के अधिकांश सदस्यों द्वारा व्यापक रूप से साझा किया जाता है। इसमें फिल्म मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल तथा भाषाई सम्मेलनों जैसे विविध माध्यमों पर समाज के प्रमुख विचारों (संस्कृति) का चित्रण शामिल हो सकता है। लोकप्रिय संस्कृति अक्सर जन संस्कृति या लोक संस्कृति से संबंधित होती है, जो श्रमिक वर्गों के साथ संबंधित होती है साथ ही उच्च संस्कृति तथा विभिन्न संस्थागत संस्कृतियों (कानूनी संस्कृति, राजनीतिक संस्कृति, शैक्षिक संस्कृति, आदि) से भिन्न होती है। यह उम्र, लिंग, क्षेत्र, धर्म, वर्ग इत्यादि की विभिन्न श्रेणियों से बहुत आगे जाती है। उदाहरण के लिए, लोकप्रिय संस्कृति अभिनेत्री माधुरी दीक्षित की हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता में स्पष्ट होती है जो कला / गंभीर फिल्मों की तुलना में आबादी के बड़े हिस्से को आकृष्ट करती है। अभिनेत्री कोंकणा सेन जिनकी फिल्में आम तौर पर विशिष्ट दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

लोकप्रिय संस्कृति का विशेष ऐतिहासिक तथा सामाजिक संदर्भ होता है साथ ही यह अवधि विशेष की प्रमुख विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के बाद की फिल्में जैसे नया दौर (1957), जिस देश में गंगा

बहती है (1961) ने स्वतंत्रता के बाद के भारत में नेहरूवादी राजनीति के राष्ट्र निर्माण के आशावाद को प्रमुखता से दर्शाया। उत्तर–औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा आधुनिक समय में, लोकप्रिय संस्कृति (टेलीविजन, फिल्म, किताबें, टैब्लॉयड), समाचार पत्र / पत्रिकाएं, संगीत आदि उत्तर–आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के साथ इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ब्लॉग, व्हाट्सएप, आदि) के माध्यम से कल्पनाओं को भी आकार दे रही है।

जन संस्कृति या लोकप्रिय संस्कृति, संरचनावाद के सिद्धांत के अनुसार 'प्रमुख विचारधारा का पुनरुत्पादन करती है। मार्क्सवादी सिद्धांतकार 'एंटोनियो ग्राम्शी' आधिपत्य' शब्द का उपयोग उस तरीके को संदर्भित करने के लिए करते हैं जिसमें बौद्धिक तथा नैतिक नेतृत्व की प्रक्रिया के माध्यम से समाज के प्रमुख समूह समाज के अधीनस्थ समूहों की सहमति हासिल करना चाहते हैं ...' (स्टोरी, 2001:10)। हमने देखा है कि मुख्यधारा की हिंदी फिल्में सामान्यतः उच्च जातियों, पुरुष–केंद्रित, शहरी कहानियों को चित्रित करती हैं तथा हमारे पास हाशिए पर (मजदूर वर्ग, किसान, दलित, आदिवासी, महिलाएं, अल्पसंख्यक, आदि) तथा उनकी कहानियों पर बहुत कम लोकप्रिय फिल्में हैं।

बोध प्रश्न 1

1. **संस्कृति क्या है?**

.....

.....

.....

.....

2. **लोकप्रिय संस्कृति से आप क्या समझते हैं? व्याख्या करें।**

.....

.....

.....

इस भाग में, हम इस तथ्य को समझेगे कि 'परिवार' की धारणा पर केंद्रित होते हुये नातेदारी की पुनः कल्पना कैसे की जा रही है।

12.3 नातेदारी की पुर्नकल्पना

जैसा कि हम जानते हैं, नातेदारी प्रणाली एक व्यक्ति के अन्य लोगों के साथ संबंधों के एक समूह को संदर्भित करती है, या तो रक्त संबंध (समरक्तता) के आधार पर या विवाह संबंध (आत्मीयता) के आधार पर। उदाहरण के लिए, समरक्तता संबंध माता तथा पुत्र/पुत्री, बहन तथा भाई/बहन, पिता और पुत्र/पुत्री के बीच होते हैं, जबकि वैवाहिक संबंधों को पिता/सास तथा पुत्री/दामाद के संबंधों के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में परिवार प्रणाली पुरातनता तथा जटिलता के विषय में उल्लेखनीय रूप से अद्वितीय तथा विशिष्ट है, साथ ही देश की संस्कृति, जनसांख्यिकी, क्षेत्र तथा धर्म की विविधता के समान ही विविध है। भारत में, विभिन्न स्वरूपों में परिवार (एक या एक से अधिक माता–पिता और उनके बच्चे एक साथ एक सामाजिक–आर्थिक इकाई के रूप में रहते हैं), घर (एक घर और उसके निवासियों को एक इकाई के रूप में माना जाता है), प्राथमिक परिवार (एकल परिवार या वयस्कों की एक इकाई उनके साथ बच्चे), विस्तारित परिवार (दादा–दादी तथा अन्य रिश्तेदारों के साथ परिवार), तथा अन्य रूपों को सामान्यतः देखा जा सकता है। भारत में, वंश के संदर्भ में, पितृवंशीय परिवार (पुरुष रेखा के माध्यम से वंश) सामान्य हैं जबकि मातृवंशीय (महिला रेखा के माध्यम से वंश) आमतौर पर केरल के नायर तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों में गारो और खासी जैसे कुछ समुदायों में देखे जाते हैं। भारतीयों में पितृवंशीय व्यवस्था अधिक प्रचलित है।

विवाह संस्था कई प्रकार से परिवारों के स्वरूपों तथा प्रकार को निर्धारित करती है। विवाह के लिए, भारत में जाति एक सामाजिक कारक बनी रही है। अंतर्जातीय विवाह आम हो गए हैं क्योंकि आज भारत में जातियों के बीच अंतर्विवाही विवाह आदर्श नहीं हैं। भारतीय परिवार में, पारिवारिक सहमति से विवाह अभी भी एक प्रथा है, हालांकि वे विशुद्ध रूप से पारिवारिक सहमति विवाह नहीं हैं। अधिकांश ऐसी शादियां ऐसी होती हैं जब संबंधित वर/वधू को

अपने साथी मिल जाते हैं और फिर वे अपने परिवारों की स्वीकृति लेते हैं जिससे विवाह का 'प्रबंध' हो जाता है। अपने स्वयं के जीवनसाथी को चुनने की स्वतंत्रता विशेष रूप से उदारीकरण के बाद के युग में महत्वपूर्ण हो गई है। लेकिन, भारत के कुछ हिस्से अभी भी ऐसे हैं जहां माता–पिता या परिवार के अन्य बुजुर्गों द्वारा जीवनसाथी का चयन किया जाता है। गिडेंस (2006) का मानना है कि अब जीवनसाथी के चयन के संबंध में अधिक स्वतंत्रता है, व्यवस्थित विवाह(अरेंज मैरिज) कम हो गए हैं, साथ ही महिलाओं और बच्चों के अधिकारों को पहले से कहीं अधिक मान्यता दी जा रही है। बच्चों के अधिकार, विशेषकर बालिकाओं के अधिकार अब पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हैं।

कैस्टेल (1997) के अनुसार, पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था जो पुरुष सत्ता के वर्चस्व पर आधारित है, संकट में है। जैसा कि सामान्यतः यह दृष्टिगत है कि विलंबित विवाह तथा विपरीत लिंगों के बीच विवाह के बिना भागेदारी के दो शक्तिशाली प्रचलनों ने परिवार की संरचना को बदल दिया है। कैस्टेल (1997) पुरुष–प्रधान पितृसत्तात्मक परिवार को कमजोर करने वाले चार प्रमुख तत्वों के संयोजन को संदर्भित करते हैं जो परिवार में महिलाओं तथा बच्चों पर संस्थागत पुरुष अधिकार की विशेषता है। सर्वप्रथम, अर्थव्यवस्था तथा श्रम बाजार दोनों में परिवर्तन जो कि महिलाओं को उपलब्ध कराए गए नए शैक्षिक अवसरों के साथ मिलकर काम करता है। दूसरा, जीव विज्ञान, औषधि विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे पैदा करने तथा मानव प्रजनन पर एक नियंत्रण विकसित हुआ है। तीसरा, पहले दो तत्वों की पृष्ठभूमि के विपरीत, नारीवाद का विकास है जिसने पितृसत्तात्मकता को कम कर दिया है। चौथा, एक वैश्वीकृत संस्कृति तथा परस्पर जुड़ी दुनिया में विचारों का तेजी से प्रसार जिसके कारण महिलाओं की आवाज को पहले से कहीं अधिक स्पष्ट तथा उच्च स्वर में सुना जा रहा है। (सूर्यमूर्ति, 2012, पृष्ठ 5)

हाल के दिनों में, समकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। इसी तरह, सार्वजनिक क्षेत्रों में अधिक प्रत्यक्षता के साथ गतिविधियों तथा मान्यता के साथ परिवार और समाज में उनके जीवन में सामान्य रूप से सुधार हुआ है। वे पारिवारिक आय में योगदान कर रही हैं, साथ ही पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने में उनकी अहम् भूमिका होती है। शिक्षा तथा नौकरी के अवसरों तक पहुंच के कारण उनके क्षितिज का विस्तार हुआ है परिणामतः परिवार में उनकी भूमिकाएं, कार्य तथा स्थिति को और मजबूती मिली है। कामुकता केवल

विषमलैंगिकता (पुरुष और महिला के बीच) के विषय में नहीं है जिसे विवाह के संबंध में गंभीर रूप से परिभाषित किया गया है, इसने समलैंगिकता को स्वीकार करने के लिए स्थान दिया है। समलैंगिक संबंध सामान्य हो गये हैं। भारतीय न्यायालयों के हाल–फिलहाल के फैसले समलैंगिकता को पहचानने तथा सामान्य बनाने में ऐतिहासिक रहे हैं, लेकिन भारत में, समलैंगिक जोड़े अभी भी खुद को ''विवाहित'' के रूप में पंजीकृत नहीं कर सकते हैं। ''समान–लिंग विवाहों के वैधीकरण की मांग करने वाली तीन याचिकाओं के जवाब में, सरकार ने कहा कि विपरीत लिंग के व्यक्तियों को विवाह की मान्यता को प्रदान करने में ''वैध राज्य हित'' मौजूद है। कानून की वैधता पर विचार करने में ''सामाजिक नैतिकता'' के विचार प्रासंगिक हैं साथ ही यह विधायिका के लिए आवश्यक है कि वह भारतीय लोकाचार के आधार पर ऐसी सामाजिक नैतिकता तथा सार्वजनिक स्वीकृति को लागू करे। कानून तथा न्याय मंत्रालय का एक जवाब कहता है ... ''मौलिक अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अधीन है और इसका विस्तार नहीं किया जा सकता ... कानूनों के तहत समान लिंग विवाह को मौलिक अधिकार में शामिल किया गया है ... जो वास्तव में इसके विपरीत अनिवार्य है, ''केंद्र का प्रत्युत्तर'' (इंडियन एक्सप्रेस , २६ फरवरी २०२१)

रूढ़िवादी पारंपरिक भारतीय समाज तथा इस विषय में भी भारत सरकार द्वारा बड़े स्तर पर परिवर्तनों का विरोध किया गया है। गिडेंस (2009:30) का कहना है कि विषमलैंगिकों के बजाय समलैंगिक वास्तव में रिश्तों की नई दुनिया की खोज करने तथा इसकी संभावनाओं की खोज करने में अग्रणी रहे हैं। उन्हें होना ही था, क्योंकि जब समलैंगिकता कोठरी से बाहर आ गई, तो समलैंगिक पारंपरिक विवाह के सामान्य समर्थन पर निर्भर नहीं थे। उन्हें अधिकांशतः प्रतिकूल वातावरण नवप्रवर्तक बनना पड़ा है।

नातेदारी तथा किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग परिवार होता है। आइए चर्चा करें कि परिवार की संस्था में कैसे बदलाव आ गया है।

12.3.1 परिवार

जब बाहर की दुनिया महत्वपूर्ण तरीकों से बदलती है तो परिवार भी बदलते हैं, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के कारण जिनका परिवारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार कई तरह से भिन्न होते हैं – परिवार के सदस्य के रूप में किसे शामिल किया जाता है, रहने की व्यवस्था, विचारधाराएं, भावनात्मक वातावरण, सामाजिक तथा नातेदारी समूह, आर्थिक तथा अन्य कार्य। उदाहरण के लिए, 1960 के दशक में पश्चिम द्वारा बाल शोषण को केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में ''खोजा'' गया था। हाल ही में, पारिवारिक शोधकर्ता पारिवारिक जीवन के तनावों को बेहतर ढंग से समझने के लिए पारिवारिक हिंसा जैसे बच्चो के साथ या पति–पत्नी के र्दुव्यवहार का अध्ययन कर रहे हैं। पारिवारिक हिंसा के अध्ययन से पता चलता है कि यह अनुमान से कहीं अधिक व्यापक है, इसे आसानी से मानसिक बीमारी के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, तथा यह निम्न वर्गों तक ही सीमित नहीं है। पारिवारिक हिंसा मनोवैज्ञानिक तनावों तथा बाहरी तनावों का एक उत्पाद प्रतीत होती है जो सभी सामाजिक स्तरों पर सभी परिवारों को प्रभावित कर सकती है।

यहॉ केवल माता अवलम्बित परिवार हैं, केवल पिता अवलम्बित परिवार हैं, दादा–दादी पोते–पोतियों की परवरिश करते हैं, और समलैंगिक परिवार हैं। व्यक्तियों में परिवार शामिल है यह एक सामाजिक इकाई भी है, तथा एक बड़े समाज का हिस्सा है। यह अभी भी प्रजनन–देखभाल तथा बच्चों ,वयस्कों के समर्थन से निपटने वाले परिवार की बुनियादी भूमिका को पूरा करता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, एक इकाई के रूप में परिवार अपने आसपास हो रहे परिवर्तनों से अछूता नहीं है, परिवार की कुछ विशेषताओं की पहचान इस प्रकार की जा सकती हैः (1) न्यूनतम दो वयस्क व्यक्ति एक साथ रहते हैं। (2) श्रम विभाजन के कुछ स्तर है अर्थात, वे दोनों समान कार्य नहीं करते हैं। (3) सदस्यों के बीच आर्थिक और सामाजिक आदान–प्रदान होता है यानी वे एक दूसरे के लिए कार्य करते हैं। (4) सदस्य सामान तथा सामाजिक गतिविधियों के अतिरिक्त भोजन, निवास जैसी चीजों को साझा करते हैं। (5) वयस्क सदस्यों के अपने बच्चों के साथ ही माता–पिता के साथ संबंध होते हैं, क्योंकि उनके बच्चों के साथ उनके पारिवारिक संबंध होते हैं माता–पिता संरक्षण पोषण और सहयोग के साथ–साथ अपने बच्चों पर कुछ अधिकार का प्रयोग

करते हैं। (6) बच्चों में, भाई–बहन का रिश्ता प्यार, आत्मीयता तथा एक दूसरे की मदद करने जैसी भावनाओं को साझा करना है।

उपरोक्त शर्तों की उपस्थिति का उपयोग 'एक परिवार' को इकाई के रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया जा सकता है। जैसा कि हम घरों में परिवर्तन देख रहे हैं, परिवर्तन जो कि व्यापक स्तर पर समाज में हो रही घटनाओं का परिणाम है।

पूर्व–औद्योगिक युग में, ज्यादातर कृषि प्रधान परिवारों में पिता परिवार का मुखिया था साथ ही व्यवसाय का नेतृत्व भी करता था। उसके अधीन पत्नी/माँ, बच्चे, नौकरीपेशा मजदूर उच्च/मध्यम जाति/वर्गीय परिवार में काम करते थे। औद्योगीकरण तथा शहरीकरण के परिवर्तन के फलस्वरूप प्रवासन के कारण संयुक्त परिवार का एकल परिवार में परिवर्तन हुआ साथ ही काम तथा परिवार का अलगाव हो गया। उन्नीसवीं सदी के मध्यवर्गीय शहरी परिवार में सामान्यतः घर में रहने वाली मां तथा कामकाजी पिता होते थे। निम्न वर्ग के परिवारों में परिवार की महिलाओं–पत्नियों, माताओं तथा बेटियों से अधिक आर्थिक योगदान प्राप्त होता था।

बीसवीं सदी की शुरुआत में कई बदलाव देखे गएः उत्तर–औद्योगिक सेवा तथा सूचना अर्थव्यवस्था की दिशा में परिवर्तन, चिकित्सा विज्ञान की प्रगति से मृत्यु दर तथा प्रजनन क्षमता में नियंत्रण संभव हुआ तथा शिक्षा के स्तर में वृद्धि। इन बदलावों से महिलाओं पर ध्यान केंद्रित हुआ, उन्हें बदलाव का अग्रदूत बना दिया। मृत्यु दर में गिरावट का आशय महिलाओं की लंबी उम्र तथा कम बच्चे पैदा करना था। विवाह की संस्था में बदलाव आया जो कि माता–पिता के बच्चों के बच्चों को पालने के स्वरूप से अधिक दो व्यक्तियों के बीच एक व्यक्तिगत संबंध के मिलन के रूप में बदल गई साथ ही, साहचर्य तथा यौन अंतरंगता को अब विवाह के केंद्र के रूप में परिभाषित किया गया था।

शहरीकरण, प्रवास तथा औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं का भारतीय परिवार पर भी प्रभाव पड़ा है। साथ ही, इन प्रक्रियाओं के अतिरिक्त, कुछ क्षेत्र–विशिष्ट कारक हैं जो पारिवारिक जीवन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार के आसपास के क्षेत्रीय संघर्ष परिवार के भीतर सामंजस्य तथा बंधन को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से जम्मू–कश्मीर, नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों आदि जैसे हिस्सों में। शहरी भारतीय एकल परिवार वैवाहिक संघर्ष, अलगाव, तलाक,

अंतर–पीढ़ीगत मतभेद आदि जैसे कई मुद्दों का सामना करते हैं। ग्रामीण भारत में परिवार पुरुष तथा महिला द्वारा पति–पत्नी के रूप में निभाई जाने वाली लैंगिक भूमिकाओं में असमानता दिखाते हैं।

''पारंपरिक परिवार में, बच्चे एक आर्थिक हित थे। इसके विपरीत, आज पश्चिमी देशों में एक बच्चा, माता–पिता पर एक बड़ा वित्तीय बोझ डालता है। बच्चे को जन्म देना पहले की तुलना में एक अलग तथा विशिष्ट निर्णय है, साथ ही यह मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक जरूरतों द्वारा निर्देशित निर्णय है। बच्चों पर तलाक के प्रभावों तथा कई पितृहीन परिवारों के अस्तित्व के विषय में हमारे मन में जो चिंताएँ हैं, उन्हें बच्चों की देखभाल तथा सुरक्षा के बारे में हमारी बहुत अधिक अपेक्षाओं की पृष्ठभूमि के विपरीत समझना होगा। ऐसे तीन क्षेत्र हैं जिनमें भावनात्मक संचार प्रभावी है, जो लोगों के निजी जीवन को एक साथ बांधते थे– यौन तथा प्रेम संबंध, माता–पिता के संबंध तथा दोस्ती, यही कारण है कि अंतरंगता, पुराने संबंधों का स्थान ले रही है। (गिडेंस, 2009, पृष्ठ 29)

अब, हम अपने अंतिम खंड पर आते हैं जहाँ हम लोकप्रिय संस्कृति पर चर्चा करने जा रहे हैं तथा इसने नातेदारी की पुर्नकल्पना की।

बोध प्रश्न 2

1) नातेदारी को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

2) भारत में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को कमजोर करने वाले किन्हीं दो तत्वों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

12.4 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

''कला विश्व की संस्कृति का सबसे अच्छा संभव परिचय है। मैं इसे दबी हुई आशाओं, संचित यादों, कोमल भावनाओं के लिए प्यार करता हूं जो इसे एक स्पर्श में बुला सकती हैं। यह आत्मा से रोजमर्रा की जिंदगी की धूल को धो देती है।'' पाब्लो पिकासो (जीवन, 11 सितंबर 1964)। उपरोक्त उद्धरण में पिकासो कला के विषय में बात कर रहे हैं, लेकिन यह सिर्फ कला नहीं है बल्कि लोकप्रिय संस्कृति है जो बड़े समाज को दर्शाती है तथा विभिन्न समाजों की संस्कृति का परिचय है साथ ही हम कहानियों को उनके निर्माण की समयावधि में संदर्भित कर सकते हैं। पारंपरिक परिवारों के रूप में उन्हें नेहरू युग की फिल्म भाभी (1957) से लोकप्रिय संस्कृति में चित्रित किया गया था, जहां एक विधुर तथा एक बच्चे के पिता के नेतृत्व में एक ही घर में एक चाची के साथ चार भाइयों का एक बड़ा परिवार रहता है, बलराज साहनी जो एक अधिक शिक्षित शांता से शादी करता है जो अपने परिवार की देखभाल करने के लिए आती है तथा परिवार को एक साथ रखने के लिए वह जो प्रयास करती है।

1950 तथा 1960 के दशक की अधिकांश फिल्मों ने बड़े भारतीय परिवार को चित्रित किया जहां भाइयों के बीच संघर्ष अंत में हल हो गया और परिवार खुशी से रहता था। प्रेम कहानियों में, लड़के और लड़की के परिवारों ने ज्यादातर वर्ग के मानदंडों (अमीर लड़का गरीब लड़की तथा इसके विपरीत) पर शादी का विरोध किया और अंततः शादी के लिए राजी हो गए। इस दौर की ज्यादातर फिल्मों में परिवार की इच्छाएं अहम होती थीं।

1970 के दशक ने हिंदी फिल्मों में अधिक हिंसा दिखाई, समाज का परिवर्तन और उसका गुस्सा तथा निराशा दो भाइयों की कहानी के माध्यम से *दीवार (1975)* जैसी फिल्मों में दिखाई दी, जिसमें एक बेटा पुलिस वाला और दूसरा एक डाकू होता है, जहां मां अपने धर्मी बेटे को चुनती है और अंततः अपराधी बेटे को मरना पड़ता है। *मदर इंडिया (1957)* की मां–बेटे की कहानी के समान ही। *शोले (1975)* में जया बच्चन द्वारा निभाई गई विधवा का किरदार था, अमिताभ और जया के बीच का प्रेम धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की दूसरी जोड़ी के प्रेम की तुलना में काफी सूक्ष्म है। पारंपरिक मानदंडों के अनुसार, हिंदू धर्म में विधवा पुनर्विवाह आम नहीं था और यह पारंपरिक धारणा अछूती रही क्योंकि अमिताभ अंत में दर्शकों को प्रचलित सामाजिक मानदंडों के लिए किसी भी तरह की

चुनौती से बचाते हुये मर जाते हैं। गुलजार की आंधी (1975) फिल्म में सुचित्रा सेन को एक शक्तिशाली राजनेता के रूप में दिखाया गया, जो अपने पति से अलग हो गई थी, अपने राजनीतिक कार्यों के कारण बच्चे की उपेक्षा करने पर उनसे पति ने आपत्ति जताई थी। वे बाद में मिलते हैं और सुलह कर लेते हैं, शादी बरकरार रहती है।

सिलसिला (1981) फिल्म दो पूर्व प्रेमियों अमिताभ और रेखा के बीच एक विवाहेत्तर संबंध पर आधारित थी, लेकिन अंत में दोनों अपने जीवनसाथी के पास वापस आ जाते हैं। शादी एक ऐसा बंधन है जिसे तोड़ना नामुमकिन है, ज्यादातर हिंदी फिल्मों ने यही संदेश दिया, चाहे कुछ भी हो जाए। विवाहेत्तर संबंध पर एक और कहानी, महेश भट्ट द्वारा निर्देशित *अर्थ (1982)* शबाना आजमी द्वारा निभाई गई एक महिला की यात्रा पर केंद्रित है, जो उसके पति के दूसरी महिला स्मिता पाटिल के साथ संबंध के कारण टूट गई थी। दोषी पति और उसके मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान महिला साथी के कारण शबाना तथा उसके पति के रिश्ते को नुकसान होता है, जो अपने दम पर जीवन जीने वाली एक मजबूत, आत्मविश्वासी महिला के रूप में उभरती है।

1980 के दशक में पितृसत्ता को चुनौती देने वाली महिलाओं की शक्ति को दर्शाने वाली कई और महिला केंद्रित फिल्में आईं। *मिर्च मसाला (1987)* 1940 के भारत में स्थापित किया गया था जहाँ महिलाएं एक सूबेदार (कर संग्रहकर्ता) और गाँव के कुछ पुरुषों के खिलाफ लड़ती हैं। 1990 के दशक में, उदारीकरण के बाद के युग में समाज ने परिवर्तन देखा और लोकप्रिय संस्कृति में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हुए। दीपा मेहता की फिल्म *फायर (1996)* दो देवरानी–जेठानी (शबाना आजमी और नंदिता दास) के बीच समलैंगिक संबंधों पर आधारित समलैंगिकता पर आधारित पहली हिंदी पूर्ण फिल्म थी। समाज में हो रहे बदलावों को दिखाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम था। 1990 के दशक में शेखर कपूर ने यूपी की डाकू फूलन देवी पर *बैंडिट क्वीन (1994)* फिल्म बनाई, जो अपने जमाने में आतंक का पर्याय थी।

1990 के दशक में राजश्री प्रोडक्शंस द्वारा हिट परिवार–उन्मुख फिल्मों की श्रृंखला में एक तेजी से बदलते समाज के बीच संयुक्त परिवार का प्रेम भी देखा गया, जैसे *हम आपके हैं कौन (1994)* से *हम साथ साथ हैं (1999)* में पारिवारिक मूल्यों तथा पारिवारिक एकजुटता को विशेष रूप से दर्शाया गया है। यश चोपड़ा

की दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे – डीडीएलजे (1995) ने भी पारिवारिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्यार की भावनाओं पर परिवार की सहमति को सर्वोपरि बताया।

बॉक्स 1

हिंदी सिनेमा में प्रेम तथा विवाह पर पेट्रिसिया उबेरॉय के विचार

पेट्रीसिया उबेरॉय, एक मानवविज्ञानी हैं, जिन्होंने नातेदारी, परिवार तथा विवाह पर व्यापक रूप से शोध तथा लेखनकार्य किया है, ने विश्लेषण के लिए दो बहुत लोकप्रिय हिंदी फिल्मों का चुनाव किया है, *दिलवाले दुल्हनिये ले जाएंगे (डीडीएलजे)* और *परदेस (1997)*। उनका मानना है कि ''समकालीन लोकप्रिय सिनेमा भारतीय मध्यवर्गीय डायस्पोरा से उत्पन्न समस्याओं के साथ जुड़ाव तथा एक वैश्वीकृत दुनिया में भारतीय पहचान की अभिव्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण पर्याय के रूप में उभरा है'' (उबेरॉय, 1998: 310)। विश्लेषण की गई दोनों फिल्में विदेशों में बसे भारतीयों के इर्द–गिर्द घूमती हैं, जो ''पारिवारिक जीवन की विशिष्टताओं के संदर्भ में भारतीयता, विशेष रूप से प्रेमालाप तथा विवाह की संस्थाओं'' को परिभाषित करते हैं (उक्तः 305) ये फिल्में प्रेम कहानियां हैं जो ''नैतिक'' पसंद की कुछ दुविधाओं को विस्तृत करती हैं जो समकालीन भारतीय समाज में गहराई से प्रतिध्वनित होती हैं। ये दुविधाएं दो प्रकार की होती हैं, जो सिनेमाई कथा में तथा उसके माध्यम से परस्पर जुड़ी होती हैं। पहला व्यक्तिगत इच्छा, सामाजिक मानदंडों तथा पसंद के विवाह के संबंध में अपेक्षाओं के बीच का संघर्ष है। इन दोनों फिल्मों में इसका सुखद समाधान 'अरेंज्ड लव मैरिज' का समकालीन आदर्श है, यानी मंगनी की एक शैली जिसके तहत पहले से ही बनाई गई प्रेम पसंद को माता–पिता की मंजूरी से समर्थन दिया जाता है तथा उसके बाद 'अरेंज मैरिज' की तरह व्यवहार किया जाता है। (वहीः 306)। उबेरॉय लिखती हैं कि कई ''समाजशास्त्रियों ने उम्मीद की थी कि भारतीय समाज के आधुनिकीकरण से 'व्यवस्थित विवाह'(अरेंज्ड मैरिज) की प्रथा को कमजोर पड जाएगी, दोनों ही कारणों से, एक व्यक्तिवादी लोकाचार को प्रोत्साहित करके तथा अंतर्विवाह के नियमों को तोड़कर'' (वहीः 308)। वह पाती है कि यह

उम्मीद सच्चाई से बहुत दूर दिखाई देती है, आधुनिकीकरण ने अपनी भूमिका निभाई हो सकती है, लेकिन उस सीमा तक नहीं जिसकी अपेक्षा की गई थी, पारिवारिक विवाह तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था की संस्था को मध्यवर्गीय परिवारों के बीच अंतरराष्ट्रीय विन्यास में पुनः पेश किया जाता है। वह लिखती हैं कि अंतरराष्ट्रीय भारतीय परिवार को एक पितृसत्तात्मक संस्था के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहां परिवार के मुखिया–पिता के पास अधिकार तथा जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों के लिए विवाह की व्यवस्था करें। वह लिखती हैं कि ये फिल्में ''पितृवंशीय संयुक्त परिवार के आदर्शीकरण तथा प्राकृतिककरण'' का समर्थन करती हैं।

इस प्रकार, उदाहरण के लिए, दोनों फिल्में मानती हैं कि घरेलू सदस्यता में शामिल होने का स्वरूप स्वचालित रूप से पितृस्थानिक निवास के सिद्धांत का पालन करेगा। इसी तरह डीडीएलजे में वरिष्ठ मल्होत्रा तथा परदेस में किशोरी लाल दोनों अपने बेटों की पत्नियों को 'लाने' के लिए भारत लौटते हैं'' (वहीः 332)। गठबंधन के रूप में विवाह का सिद्धांत रिश्तेदारी का एक और पहलू है जिसे अंतरराष्ट्रीय विन्यास में पुनः पेश किया जाता है। वह लिखती हैं कि प्यार में एक युवा जोड़े के बीच सिर्फ एक व्यवस्था के बजाय, शादी परिवारों के बीच एक गठबंधन है। वह आगे कहती हैंः "भारतीय रिश्तेदारी की व्यापक भारतीय संस्कृति से अपरिचित लोगों के लिए, परदेस की प्रेम कहानी एक उत्सुक अंत प्रतीत होता है। यहां हम युवा जोड़े को एक–दूसरे को गले लगाते या माता–पिता के आशीर्वाद से एक–दूसरे के साथ एकजुट होते हुए नहीं पाते हैं। इसके विपरीत, अंतिम दृश्य में एक ओर पिता और (पालक) पुत्र और दूसरी ओर पिता और पुत्री को गले लगाते हुए दिखाया गया है। खुश युवा जोड़े केवल अपने पिता के संबंधित कंधों पर एक दूसरे को देखते हैं "(उक्तः 333)। उबेरॉय ने निष्कर्ष निकालती है कि ''डीडीएलजे और परदेस दोनों में, रिश्तेदारी की भारतीय संस्कृति के सभी तीन प्राथमिक सिद्धांतों (यानी, संयुक्त परिवार की संस्था, पितृसत्तात्मक अधिकार तथा अंतर–पारिवारिक गठबंधन के रूप में विवाह) को प्रवासी के संदर्भ में चुनौती दी जाती है– और अंत में फिर से पुष्टि की जाती है'' (वही;333)

(उबेरॉय, पी. (1998), *द डायस्पोरा कम्स् होमः डीसिपलिन डिजायर इन डीडीएलजे*, कन्ट्रीब्यूशन टू इंडियन सोशियोलॉजी, 32 (2), 305–336)

अलीगढ़ (2015) फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे एक कॉलेज के प्रोफेसर को उसकी यौन पसंद पर परेशान किया गया था कि उन्हें आत्महत्या करनी पड़ी। इस्मत चुगताई की लघु कहानी लिहाफ (1942) ने हंगामा खड़ा कर दिया जहां उन्हें समलैंगिकता पर लिखने के लिए अश्लीलता के आरोपों के साथ कानूनी मामलों का सामना करना पड़ा।

समाज अभी भी पश्चिमी देशो के विपरीत समलैंगिक संबंधों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, जहां इन विषयों को कला, सिनेमा (ब्रोकबैक माउंटेन, समलैंगिक संबंधों पर 2006 की फिल्म), पत्रिकाओं आदि जैसे विभिन्न माध्यमों के माध्यम से लोकप्रिय संस्कृति में काफी लोकप्रिय तथा चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिए, प्रभावशाली समलैंगिक फोटोग्राफर जॉन ई. बिरेन (जिन्हें जेईबी के नाम से जाना जाता है) को 1979 की अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक *आई टू आईः पोर्टेट्स ऑफ लेस्बियन्स* को उन लोगों के लिए स्वयं प्रकाशित करना पड़ा, जिन्हें उन्हें सबसे अधिक देखने की आवश्यकता थी। मुख्यधारा के समर्थन की कमी के बावजूद, जेईबी ने सभी उम्र तथा पृष्ठभूमि की समलैंगिक / समलैंगिक महिलाओं के श्वेत–श्याम चित्रों का एक संग्रह प्रकाशित किया, जो कारों को ठीक करने, अपने प्रेमियों के साथ आराम करने, अपने बच्चों को गले लगाने, राजनीतिक कार्रवाई का विरोध करने जैसे रोजमर्रा के काम करते थे। तस्वीरों के साथ लघु साक्षात्कार के साथ। इस पुस्तक की छवियों में समलैंगिकों को उनकी शिष्टता, मानवता, सुंदरता तथा प्रतिभा के साथ पूर्ण रूप से प्रदर्शित करने के तरीके को बदल दिया।

चित्र। 1. ग्लोरिया एंड चर्मेन, बाल्टीमोर, मैरीलैंड, 1979 (जोन ई. बिरेन) 'आई टू आई', पोर्टेट्स ऑफ लेस्बियन्स', एंथोलॉजी एडिशन द्वारा प्रकाशित

टीवी सोप ओपेरा ''प्रकार्यात्मक, पितृसत्तात्मक परिवार'' के अपने चित्रण को एकल (जस्सी जैसी कोई नहीं) या संयुक्त परिवार (बालाजी प्रोडक्शंस के अधिकांश सोप ओपेरा) के रूप में दिखाते हैं। अमेरिकन शो *लीव इट टू बीवर,* से *द सिम्पसन्स टू मॉडर्न फैमिली* तक, आदर्श को बढ़ावा देने से लेकर अब बिना किसी आदर्श की स्वीकृति को बढ़ावा देने तक। मॉडर्न फैमिली टीवी 21वीं सदी के परिवार के दैनिक संघर्षों को दिखाता है जहाँ शो मातृत्व, मिश्रित परिवारों, किशोरावस्था, लैटिन महिलाओं तथा समलैंगिकता के आसपास की रूढ़ियों को उजागर करता है।

अमेरिका में आधुनिक परिवार की टूटी हुई शादियों की प्रवृत्ति को दर्शाने का माध्यम सौतेला परिवार भी है। शो में, जे अपनी पत्नी डेडे को तलाक देता है, फिर ग्लोरिया से शादी कर लेता है। डेड के साथ जे के दो बच्चे थे, क्लेयर (उसका एकल परिवार, विशेषतः अमेरिकी परिवार) और मिशेल (समलैंगिक चरित्र ने कैम नाम के एक व्यक्ति से शादी की और साथ में उन्होंने एक एशियाई छोटी लड़की, लिली को गोद लिया), जे से शादी के एक पहले ग्लोरिया का एक बच्चा था, मैनी। एक अन्य लोकप्रिय शो, *ऑरेंज इज द न्यू ब्लैक, 2013* से चल रहा है, जिसने नियमित रूप से दिखने वाले समलैंगिक, उभयलिंगी तथा ट्रांसजेंडर

पात्रों को पेश करके एलजीबीटीक्यू आंदोलन में मदद की। लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न माध्यमों पर विभिन्न कहानियों तथा पात्रों के चित्रण नातेदारी और समाज में बदलाव की ओर इशारा करते हैं।

गतिविधि

अपने अध्ययन केंद्र पर अन्य छात्रों के साथ 1960 से 2020 तक विभिन्न युगों की लोकप्रिय हिंदी फिल्मों की एक सूची बनाएं और हिंदी फिल्मों में 'भारतीय परिवार' के संक्रमण के प्रस्तुतिकरण के विषय में चर्चा करें।

12.5 सारांश

लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुनर्कल्पना पर आधारित इस इकाई में, हमने संस्कृति और लोकप्रिय संस्कृति विषय पर चर्चा के साथ शुरुआत की। फिर हमने नातेदारी और परिवार की संस्थाओं में हुए परिवर्तनों की जाँच की। और अंत में, लोकप्रिय संस्कृति जैसे फिल्मों, साहित्य, टीवी धारावाहिकों के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से, हमने लोकप्रिय संस्कृति में नातेदारी में परिवर्तन के चित्रण पर बहस की। जबकि एक अवधि में पारिवारिक रचनाओं में कुछ व्यापक परिवर्तन होते हैं, यह भी सच है कि परिवार, विवाह तथा नातेदारी की संस्थाओं के आसपास की पारंपरिक धारणाओं को पुनः पेश किया जाता है। दो फिल्मों के विषय में पेट्रीशिया उबेरॉय का विश्लेषण, जिस पर हमने बॉक्स सेक्शन में चर्चा की, हमें बताता है कि कैसे प्रवासी संदर्भ में पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचना के बावजूद अंतरराष्ट्रीय विन्यास को पुनः प्रस्तुत किया जाता है। यह इकाई लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न माध्यमों पर विभिन्न कहानियों तथा पात्रों के चित्रण को पकड़ने की कोशिश करती है, जो नातेदारी तथा समाज में बदलाव की ओर इशारा करती है।

12.6 संदर्भ

गिडेंस, एंथोनी. 2009, द ग्लोबल रिवोल्यूशन इन फैमिली एंड पर्सनल लाइफ इन *फैमिली एंड ट्रेडिशन (सं0)*, पंद्राहवा संस्करण, पियर्सन, न्यूयॉर्क।

स्टोरे, जॉन. 2001, *कल्चरल थ्योरी एंड पॉपुलर कल्चर*, पियर्सन/प्रेंटिस हॉल, लंदन।

सूर्यमूर्ति राधामणि. 2012, *"द इंडियन फैमिलीः नीड्स फॉर ए रिविजिट"*, जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव फैमिली स्टडीज, वॉल्यूम 43, नंबर 1 (https%//www-jstor-org/stable/41585377 30 मार्च, 2021 को एक्सेस किया गया)।

स्कोल्निक अर्लेने एस. एंड स्कोलनिक जेरोम एच. 2009. *फैमिली इन ट्रांजिशन* (सं0) पंद्राहवा संस्करण, पियर्सन, न्यूयॉर्क।(https://www.them.us/story/jeb-eye-to-eye-photo-book-portraits-of-lesbians 3 अप्रैल, 2021 को एक्सेस किया गया)

https://indianexpress.com/article/india/same-sex-marriages-legal-recognition-centre-7204303/ 10 अप्रैल, 2021को एक्सेस किया गया

http://nybyu.com/pop-culture-analysis/modern-family-promotes-the-acceptance-of-all-types-of-families/10 अप्रैल, 2021 को एक्सेस किया गया

12.7 अपनी प्रगति की जांच के लिए बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार तथा प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा करते तथा सीख सकते हैं। यह वही है जो व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सीखता है क्योंकि वह किसी विशेष समाज, उसकी भाषा, रीति–रिवाजों, रूढियो, प्रथाओं, विश्वास प्रणालियों आदि में उत्पन्न होता है।

2. फिल्म मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल और भाषाई सम्मेलनों जैसे विविध माध्यमों पर लोकप्रिय संस्कृति का चित्रण, एक निश्चित समय पर प्रमुख विचारों का प्रतिबिंब है। श्रमिक वर्ग के साथ लोकप्रिय संस्कृति का संबंध इसे समाज के चरित्र तथा बहुसंख्यक आबादी के चरित्र को और भी अधिक प्रतिबिंबित करता है जो उच्च संस्कृति (कलागृह सिनेमा / कला) और विभिन्न संस्थागत संस्कृतियों (कानूनी संस्कृति, राजनीतिक संस्कृति, शैक्षिक संस्कृति) से भिन्न हो सकती है।)। यह उम्र, लिंग, क्षेत्र, धर्म, वर्ग आदि की विभिन्न श्रेणियों को पार कर सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. नातेदारी प्रणाली एक व्यक्ति के अन्य लोगों के साथ संबंधों के एक समूह को संदर्भित करती है, या तो रक्त संबंध (समरक्तता) के आधार पर या विवाह संबंध (आत्मीयता) के आधार पर।

2. सर्वप्रथम, अर्थव्यवस्था तथा श्रम बाजार दोनों में परिवर्तन के कारण जो अवसर महिलाओं को उपलब्ध कराए गए वे नए शैक्षिक अवसरों के साथ मिलकर काम करता है। दूसरे, जीव विज्ञान, औषधि विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे जन्म देने तथा मानव प्रजनन पर एक नियंत्रण प्रदान की गयी।

उपयोगी पुस्तकें

Carsten, Janet. 1995. 'The Substance of Kinship and the Heat of the Hearth: Feeding, Personhood, and Relatedness among Malays in Pulau Langkawi' *American Ethnologist*, 22 (2): 223-24.

Carsten, Janet.2004. *After Kinship*, Cambridge University Press

Dube, L, (2000) Doing Kinship and Gender: An Autobiographical Account in *Economic and Political Weekly*, Vol. 35, No. 46, pp. 4037-4047

Dube, Leela. 1974.*Sociology of Kinship*. Popular Prakashan: Bombay

Dumont,L., 1968,'MarriageAlliance',inD.Shills(ed.),*International Encyclopedia of the SocialSciences*,MacmillanandFreePress.

Giddens, Anthony, 2009. The Global Revolution in Family and Personal Life in *Family in Transition* (ed.) FIFTEENTH EDITION, Pearson: New York.

Gough, K.E. *The Nayars and the Definition of Marriage*, The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland, Vol. 89, No. 1 (Jan. - Jun., 1959), pp. 23-34

Karve, I. 1953. *Kinship Organisation in India. Deccan College Monograph Series*. Poona: Deccan College Post-Graduate and Research Institute

Karve, I. 1994. "The Kinship Map of India". In Patricia Uberoi (ed.) Family, Kinship and Marriage in India. Oxford University Press: New Delhi

Lévi-Strauss,Claude. 1969. *The Elementary Structures of Kinship*, London: Eyre andSpottiswoode.

Needham, Rodney.1971. (ed). *Rethinking Kinship and Marriage*, London: Tavistock

Parkin, Robert and Linda Stone (eds.) 2004. *Kinship and Family: An Anthropological Reader*. Oxford: Blackwell Publishing Ltd.

Parkin, Robert. 1997. *Kinship: An Introduction to Basic Concepts*. Oxford: Blackwell Publishers Ltd.

Rivers, W. H. R., Firth, R., & Schneider, D. M. (1968). *Kinship and social organization* (No. 34). Athlone Press.

Schneider D.M 1980.*American Kinship: A Cultural Account*, University of Chicago Press

Uberoi, Patricia. 1993 (ed), *Family, Kinship, and Marriage in India* Oxford University Press:Delhi

Vogel, E. F., & Bell, N. W. (Eds.). (1960). *A Modern Introduction to the Family*. Free Press.

Weston, Kath .2013. *Families We Choose: Lesbians, Gays, Kinship*. Columbia University Press

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

शब्दावली

वैवाहिक संबंध : विवाह द्वारा वजूद में आया संबंध, जैसे सास/ससुर और बहू–दामाद आदि

पितृबंधु : पुरुष–वंश–क्रम द्वारा किसी एक पूर्वज के वंशज, जो एक साथ एक पुरुष मुखिया के अधिकार में रहते हैं।

पितृबंधुत्व : वंशज का निर्धारण, पुरुष–वंश–क्रम की अखंडित शृंखला से होती है

गठबंधन : समाज की ऐसी दृष्टि जिसमें सामाजिक सम्मिलन और समूह की परिभाषा के लिए वंश–क्रम समूहों के बीच वैवाहिक संबंध (अक्सर बार–बार) पर ज़ोर रहता है।

संदिग्ध पक्षीय वंश : इसमें वंश की पहचान बिना किसी तय नियम के माता या पिता में से किसी भी पक्ष से की जाती है।

जाति : जन्म के आधार पर स्तरीकरण (ऊँच–नीच) की यह प्रणाली विशेष तौर पर भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाती है।

वर्ग : इससे सामाजिक रुतबा या स्थिति का बोध होता है। कार्ल मार्क्स ने उत्पादन प्रणाली पर नियंत्रण होने या न होने के आधार पर इसे परिभाषित किया। वहीं, वेबर ने इसके साथ 'रुतबा' (सामाजिक सम्मान या प्रतिष्ठा के आधार पर सामाजिक समूहों के बीच अंतर) और 'पार्टी' (सामान्य पृष्ठभूमि, उद्देश्य या हित के आधार पर एक साथ काम करने वाले व्यक्तियों का समूह) जैसे कारकों को भी जोड़ा।

वर्गात्मक नातेदारी प्रणाली : वर्गीकरण की एक रूप जिसमें संपार्श्विक परिजन को लाइनियल परिजन के साथ समान रूप से समझा जाता है (उदाहरण के लिए पिता के भाई के बच्चों को भाई या बहन के समान शब्दों से बुलाया जाता है)

मातृ–बंधु : रक्त से संबंधित दोनों पक्षों के सभी रिश्तेदार।

मातृबंधुत्व : माता या पिता के पक्ष से पूर्वज और व्यक्ति के संबंध

कमेन्सलिटी : एक साथ भोजन करना, भोजन साझा करना। इसके पैटर्न में घरेलू और सामाजिक दोनों संबंध प्रदर्शित होते हैं।

दाम्पत्य : विवाह आधारित बंधन या संबंध, जैसे पति और पत्नी के बीच।

समरक्तमूलक संबंध : माता और बेटे/बेटी, भाई–बहन, भाई–भाई, बहन–बहन, पिता और बेटे/बेटी आदि के बीच के संबंध

समरक्त : जन्म या समान रक्त आधारित संबंध।

संस्कृति : संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार और प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा करते हैं और सीख सकते हैं।

वंश : माता–पिता–बच्चे के संबंधों के सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त अनुक्रम – पिता से पुत्र के पुत्र (पितृवंशीय) और माता से बेटी की बेटी (मातृवंशीय) के वंशज – के माध्यम से पूर्वज (या पूर्वजों) से जुड़ाव आधारित संबंध।

वर्णनात्मक नातेदारी प्रणाली : वर्णनात्मक प्रणालियाँ संपार्श्विक रिश्तेदारों से वंश को अलग करती हैं। इस प्रकार, 'कज़िन' वर्णनात्मक प्रणाली में एक शब्द है। हालाँकि, इस शब्द को एक वर्गीकृत शब्द कहा जा सकता है क्योंकि इसमें कई अलग–अलग प्रकार के रिश्तेदार शामिल हैं।

घरेलू समूह : मेयर फोर्ट्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है जो अपने सभी सदस्यों के विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है।

अंतर्विवाह : अपने समुदाय के के भीतर विवाह करना

बहिर्विवाह :अपने समुदाय के बाहर विवाह करना

विस्तारित परिवार : दादा–दादी और अन्य परिजनों से युक्त नाभिकीय परिवार

फ़िलिएशन : उस संबंध को संदर्भित करता है जो एक व्यक्ति एक निर्दिष्ट माता–पिता के बच्चे होने के तथ्य के रूप में विकसित करता है। यह किसी के माता–पिता की वैध संतान होने के तथ्य से निर्मित संबंध को दर्शाता है।

संतानत्व : माता–पिता और संतानों के बीच संबंधों की पहचान के लिए एक मानवशास्त्रीय शब्द।

दत्तक : ऐसे बच्चे का पालन जो रक्त संबंध से नहीं जुड़ा है

गे : समलैंगिक पुरुष

जेंडर : जेंडर, स्त्रीत्व और पुरुषत्व से जुड़े कुछ मानदंडों और मूल्यों के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक या सांस्कृतिक भेद को संदर्भित करता है।

सामान्यीकृत विनिमय : विवाह–विनिमय की एक प्रणाली जिसमें महिलाओं को समूहों के भीतर परिसंचारी के रूप में देखा जाता है। पत्नी देने वाले पत्नी लेने वाले नहीं हो सकते।

जेनेट्रिक्स : जैविक माता

विषमलैंगिक : अपने से इतर लिंग के प्रति आकर्षण रखने वाले लोग

एचआईवी : ह्यूमन इम्युनोडेफिशिएंसी सिंड्रोम

गृहस्थी : यह मूल आवासीय इकाई है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, विरासत, बच्चों का पालन और आश्रय का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर एक आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही चूल्हे का पका हुआ खाना खाते हैं

प्रत्यक्ष विनिमय : गठबंधन की एक प्रणाली जिसमें परिजन समूह अप्रत्यक्ष रूप से पत्नियों का आदान–प्रदान करते हैं, ताकि एक पुरुष को अपनी वास्तविक या

वर्गीकृत माँ के भाई की बेटी (एमबीजेड–मातृवंशीय गठबंधन) या पिता की बहन की बेटी (एफजेडडी – पितृवंशीय गठबंधन) से विवाह करना पड़े।

प्रतिच्छेदन : विभिन्न सामाजिक श्रेणियों जैसे जाति, वर्ग, जेंडर और नस्ल के बीच अंतर्संबंध, प्रतिच्छेदन को संदर्भित करता है।

संयुक्त परिवार : माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहन और संतानों से बना परिवार

लेस्बियन : समलैंगिक महिला

लेविरेट : पुरुष का अपने मृत भाई की विधवा पत्नी से विवाह के अधिकार का नियम

सहजीवन (लिव इन) : दो वयस्कों का बिना विवाह किए, अंतरंग संबंध में स्थायी तौर पर लंबे समय तक एक साथ रहना

भौतिकतावादी सिद्धांत : यह कार्ल मार्क्स की सोच पर आधारित है, जिनके लिए भौतिक या आर्थिक परिस्थितियाँ सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं की नींव थीं।

मातृवंशीयता : माता की तरफ से वंश–क्रम तय करना

नया नातेदारी अध्ययन : जेंडर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों के अध्ययन पर अधिक ध्यान देने के साथ 1990 के दशक में नए नातेदारी अध्ययन सामने आए। इसमें जोर सत्ता और अधीनता के विभिन्न आयामों के रोजमर्रा के अनुभव और प्रतिनिधित्व में समझने पर है। साथ ही, अंतर्विरोधों, विरोधाभासों और द्वैधों पर ध्यान देने का प्रयास किया जाता है।

नॉन एग्नेटिक : कम–से–कम एक महिला लिंक से उत्पन्न वंशज

नाभिकीय परिवार : केवल माता–पिता और उनके बच्चों से बना परिवार

पितृवंशीय : पिता की तरफ से वंश–क्रम तय करना

पितृस्थानीय : विवाह के बाद दंपत्ति का पति के परिवार के साथ रहना

मातृस्थानीय : विवाह के बाद दंपत्ति का पत्नी के परिवार के साथ या उसके नजदीक रहना

बहुपति विवाह : एक महिला का एक से अधिक पुरुषों से विवाहित होना

बहुपत्नी विवाह : एक पुरुष का एक से अधिक महिलाओं के साथ विवाहित होना

लोकप्रिय संसकृति : लोकप्रिय संस्कृति को उन विश्वासों, प्रथाओं के समूह के रूप में देखा जा सकता है जो समूह या समुदाय के अधिकांश सदस्यों द्वारा व्यापक रूप से साझा किए जाते हैं। इसमें समाज के प्रमुख विचारों (संस्कृति) का फिल्म, मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल और भाषाई कन्वेन्शन जैसे विविध माध्यमों द्वारा चित्रण शामिल हो सकता है।

सोरोरेट : पुरुष का मृत पत्नी की बहन से विवाह का नियम

सौतेला परिवार : ऐसा परिवार जिसमें माता और पिता में से कम–से–कम की संतान/संतानें पूर्ववर्ती विवाह से जन्मी होती हैं।

सरोगेसी : सरोगेसी परिवार का प्रयोग ऐसे परिवार के लिए किया जाता है जो किसी ऐसे अन्य (आम तौर पर महिला) के शामिल होने से बनता है जो भ्रूण के विकास के लिए अपनी कोख किराए पर देती है।

ट्रांसजेंडर : वे जिनकी जेंडर अस्मिता उन्हें बचपन में प्रदान किए गए सेक्स से भिन्न होती है।

एकलवंशीय वंश–क्रम : इसमें वंश–क्रम या तो पिता की तरफ (पितृवंशीय) से चलता है या फिर, माता की तरफ से। एक साथ दोनों से नहीं।

मातृस्थानीय : महिला के घर में निवास

पितृस्थानीय : पुरुष के घर में निवास